जीवन कथाएं : कर्म बनाम कृपा

Life Stories (1) Karma v. Grace

वे समस्त जन जिन्हें ईश्वर का डर है, आएं और सुनें ; उस ईश्वर ने मेरे लिए क्या किया है, मेरी ज़ुबानी सुनें :

वर्तमान बंगलादेश के दक्षिणी क्षेत्र में सन् 1952 में एक उच्च हिन्दु जाति क्षत्रिय परिवार (फौजी एवं सरकार से सम्बद्ध उच्च मध्य वर्ग) में जन्म हुआ । परन्तु, सन् 1973 में मेरा पुनर्जन्म हुआ । यह मेरी कहानी है जिसे मैं आप सबको सुनाना चाहता हूँ ।

मेरा परिवार बहुत रूढ़िवादी था तथा मेरे लड़कपन से ही मुझे अपने पारिवारिक परम्पराओं तथा सामाजिक रहन-सहन बनाए रखने की कड़ी से हिदायत दी गई थी । बात उन दिनों की है जब मैं मौलिक रूप से अपनी स्कूली शिक्षा ग्रहण कर रहा था, मेरे दादा ने मुझे दैनिक धार्मिक कर्मों के अनुसरण के लिए हिदायतें दे रखी थीं । तब से अपने विश्वसनीय सलाहकार दादाजी के निर्देशन में मैंने वेद, उपनिषद, भगवद्-गीता तथा अन्य सभी हिन्दु धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ना शुरू किया । मुझे आभास हुआ कि मनुष्य की मुक्ति कर्म (कारण तथा प्रभाव, कृत्य अथवा कार्रवाई) पर आधारित है । सद्कार्यों से मुक्ति पाई जा सकती है । जैसे कोई अपने एक जन्म के दौरान सम्पूर्ण कार्य नहीं कर सकता है, उसी तरह प्रत्येक मनुष्य को संवत्सर (जन्मों के चक्र बंधन) से होकर गुजरना पड़ता है । यह तो एक प्रकार से दंड देने जैसा है । परिणामस्वरूप, एक दिन मनुष्य की आत्माएं ब्रह्मलीन (सृजनकर्ता परमात्मा) हो जाएंगी जिन्हें मोक्ष (मुक्ति) के नाम से पुकारा जाता है । इस पुनर्जन्म की चक्रीय प्रक्रिया में मानव देह के रूप में आने की कोई गारंटी नहीं है । इस प्रक्रिया में पक्षियों अथवा बहुत से विभिन्न प्रकार के जानवरों में परिवर्तित होने की पूरी संभावनाएं हैं । यह सब प्रत्येक व्यक्ति के कर्म पर निर्भर करता है । मेरे मन में ऐसा ही एक डर बैठ गया कि इस पुनर्जन्म की चक्रीय प्रक्रिया में मैं अगले जन्म में एक प्रकार का जानवर भी बन सकता हूँ । मेरे मन में यह एक प्रश्न घर कर गया : कितने मृत्यु-उपरांत जन्मों के पश्चात् मैं बच पाऊंगा । यह प्रश्न मैंने अपने दादाजी तथा अन्य हिन्दु विद्वानों से पूछा परन्तु किसी ने भी मुझे संतोषजनक उत्तर नहीं दिया । मैंने स्वयं से इसका उत्तर जानना चाहा : क्या कैदी अपनी कैद के बारे में परिचित होते हैं । परन्तु कितनी बार मुझे इस पुनर्जन्म के चक्र से गुज़रना होगा, इस प्रश्न से मैं अनभिज्ञ था । अपने पूर्वजों के साथ लगभग प्रत्येक वर्ष मैं भारतवर्ष के विभिन्न भागों में प्रसिद्ध हिन्दु मंदिरों दर्श-न र-ने

जाता था । जब कभी भी मैं जाता, मैं कई हिन्दु विद्वानों से पुनर्जन्म के चक्र तथा मुक्ति (मोक्ष) में समय की सुनिश्चितता के बारे में बात करता । मुझे पुनर्जन्म की प्रक्रिया से गुज़रने में कोई गुरेज नहीं परन्तु मुझे ऐसे विश्वास की लालसा थी कि कितने पुनर्जन्म के उपरांत मेरी आत्मा ब्रह्मलीन हो जाएगी ।

आज तक, मेरे परिवार में जाति प्रथा कड़ाई से लागू है । इस प्रथा में ही मेरा जन्म हुआ । दि-न-ब-दिन मैं अपने परिवार में यह व्यवहार देखा करता था कि मेरे अपने हिन्दु समाज की नीची जाति के लोग हमारे घर के भीतरी दालान में प्रवेश नहीं कर सकते थे । उनके अपने निश्चित बैठक स्थल थे तथा उन्हें अछूत की तरह से व्यवहार किया जाता था । यह सब देखकर मैं निराश था । इसके विरूद्ध अपना विरोध जताने का मेरे पास कोई रास्ता नहीं था । मुझे अपने दादाजी ने बताया कि मेरे भाग्य में एक उच्च जाति के घराने में मेरा जन्म लेना सुनिश्चित था और यह पूरी प्रक्रिया नैसर्गिक थी । मेरे मन में यह प्रश्न कौंधने लगा कि जब सभी मनुष्यों के सृजक ब्रह्मा हैं, तब जन्म के इस भेदभाव के सृजक किस प्रकार के होंगे । यद्यपि मेरा जन्म ब्राह्मण (पुरोहित वर्ग) से अगली उच्च जाति के परिवार में हुआ, इस क्रूर प्रथा में अपने को अनुकूल रखने में मेरे लिए बड़ा कठिन कार्य था । अपने दादाजी के साथ विभिन्न धर्मों तथा वैश्विक विचारधाराओं के बारे में मेरी काफी अच्छी बातचीत होती थी । एक दिन मैने उनसे ईसाई धर्म के बारे में पूछा । परन्तु उन्होंने मुझे एक अनूठी परिभाषा दी जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा । उनके कथनानुसार, ईसाई बड़े मलिन लोग होते हैं क्योंकि वे सूअर तथा गाय का मांस खाते हैं । उनकी परिभाषा मुख्यतः आहार प्रतिबन्धों को लेकर थी । ईसाई धर्म अछूत लोगों का एक विदेशी धर्म है । उन्हें निम्न जाति के हिन्दु लोगों की अपेक्षा अधिक अछूत माना जाता है ।

अपने मुक्ति संघर्ष के दौरान सन् 1971 में मैं अपने परिवार के साथ शरणार्थी के रूप में भारतवर्ष गया । हम शरणार्थी शिविरों में थे । दिन-ब-दिन मैं विभिन्न धर्मार्थ संगठनों से आए ईसाईयों को शरणार्थी शिविरों में दलित लोगों की सेवा करते हुए देखता था । इन लोगों के प्रति उनकी निष्ठा तथा सौहार्द प्रेम के प्रति मैं अत्यंत प्रभावित था । उनमें से कुछ के साथ मैंने मित्रता गांठ ली । ईसाई चिकित्सा दल के एक सदस्य ने एक दिन मुझे बताया क्योंकि परमेश्वर की कृपा से उनकी जान बची है इसलिए वे अच्छे कार्य कर रहे हैं । मुक्ति पाने के लिए वे अच्छे कार्य नहीं कर रहे हैं । उनके परमेश्वर तो प्रेम के परमेश्वर हैं तथा उनका प्रेम जीसस व्यक्ति में व्यक्त हो रहा है । उस व्यक्ति ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि जीसस ने कहा है कि जैसे आप स्वयं से प्रेम करते हैं, वैसे अपने पड़ोसी से प्रेम

करो, और जीसस की इस शिक्षा ने उन्हें समस्त मानवजाति की सेवा में लगा दिया है चाहे उनकी जाति अथवा धर्म कोई भी हो । इस धारणा ने परमेश्वर तथा उसके अस्तित्व के बारे में मेरी समझ में समूचा परिवर्तन ला दिया । इस समय पहली बार मैने जीसस के बारे में सुना था ।

मुक्ति संघर्ष के बाद जनवरी, 1972 में हम सब अपने देश लौट आए । हमारी काफी सम्पति को क्षति पहुंची तथा बहुत से बंगलादेशियों ने अपनी जानें गंवाई । यह एक बहुत बड़ा जनमानस हत्याकांड था । एक दिन मैं अपने गृहनगर में सड़क पर घूम रहा था । अचानक मुझे एक -ाम-पट्ट दिखाई दिया जिस पर लिखा था * वर्ल्ड मिशनरी इवेजिलिज़म * । बड़ी जिज्ञासा के साथ मैं अन्दर गया तथा अन्त में मैं इस संगठन के निदेशक को मिलने में कामयाब हो गया । उस व्यक्ति ने मुझे □ले लगाया तथा उनके शब्दों की ओर मैं आकर्षित हुआ *परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और मैं तुमसे प्रेम करता हूँ ।* उनके साथ मेरी बहुत सुन्दर बातचीत हुई और बात चीत के दौरान कई बार हमारी बहस भी छिड़ जाती थी । परन्तु वह व्यक्ति इतना धैर्यवान था कि उसने मेरी सभी बातों का उत्तर देने की अच्छी कोशिश की । उनके साथ बातचीत के कई सत्र चले तथा अन्त में उसने मुझे जीसस के बारे में बताया । उस-ने मुझे नए सूत्र की एक प्रति दी तथा इसे ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहा । बड़ी दिलचस्पी लेकर मैंने इस सूत्र को पढ़ना शुरू किया । इस नए सूत्र को मुझे अपने तकिए के नीचे छुपा कर रखना पड़ता और यहां तक कि इसे अर्धरात्रि को पढ़ता रहता । हिन्दु धर्म के सभी पवित्र ग्रन्थों की तुलना में यह बिल्कुल एक छोटे आकार की पुस्तक थी । दो माह में ही मैनें इसे पढ़ डाला परन्तु मुझे इस पुस्तक को कम से □म दस बार पढ़ने की सलाह दी गई ।

एक दिन मैं रोमन्स की पुस्तक पढ़ रहा था और इस रोमन्स 6:23 ने मेरे हृदय से कहा *क्योंकि पाप की कमाई मृत्यु है परन्तु परमेश्वर का उपहार हमारे प्रभु जीसस ईसा के प्रेम में अनन्त जीवन जीने में है । * इस विशेष पद्य से मुझे आभास हुआ कि अनन्त जीवन एक निशुल्क उपहार है । उसके लिए मुझे कोई कठिन परिश्रम करना कोई आवश्यक नहीं है । साधारणतया मुझे इसे प्राप्त करना है । यह मेरे जीवन का परिवर्तन बिन्दु था । एक हिन्दु के रूप में, मेरे लिए अनन्त जीवन ब्राह्मण में लीन होना था और मुझे इसे पुनर्जन्म चक्र के माध्यम से प्राप्त करना था जो कि एक लम्बी प्रक्रिया है तथा इसमें कई वर्ष लग सकते हैं । बंगाली बाइबल ने मेरे प्रश्न का उत्तर यूं दिया : आज मुक्ति दिवस है (6:2) । उस उत्तर की मुझे प्रतीक्षा थी । मैंने जॉन के प्रवचनों को फिर से पढ़ा और मैं इस

निष्कर्ष पर पहुंचा कि जीसस ईसा के रूप में परमेश्वर का अवतार सम्पूर्ण रूप से सही था तथा जीसस ने मेरे पापों के दंड स्वरूप खुद को सूली पर चढ़ा दिया और जिसका मुझे प्रायश्चित रहेगा । शीघ्र ही मुझे विदित हो गया कि मैं एक पापी हूँ और मेरे अच्छे कार्य भी मुझे स्वच्छ नहीं कर सकते । मैं स्वयं अपने पापों का दंड नहीं भोग सकता । अच्छे कार्य भी मुझे कोई सुनिश्चितता नहीं प्रदान कर सकते । मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने लगा तथा जीसस के आगे मैंने स्वयं को समर्पित कर दिया ।

20 जुलाई, 1973 के दिन जीसस को मैंने अपना मालिक तथा मुक्तिदाता के रूप में माना । मुझे हृदय में वास्तविक आनन्द तथा शांति की अनुभूति हुई क्योंकि जीसस ने मुझे अनन्त जीवन की पूरी गारंटी दी । मेरे भय समाप्त हो गए । एक माह के उपरांत मैं इस अनुभव को अपने परिवार के सदस्यों को बता रहा था । शुरू में तो उन्होंने सोचा कि मैं कोई पागलपन की बात कर रहा हूँ । प्रभु की कृपा से मैं काफी उत्साहित था । परन्तु जैसे ही मैंने जीसस के बारे में बात बताई तथा उनके द्वारा दिए गए वचनों के प्रति उन्हें चुनौती दी तो उन्हें ज्ञात हो गया कि मैंने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया है । शीघ्र ही मेरे पिताजी ने मुझे बुलाया परन्तु मैंने निर्भीक होकर उनके सभी सवालों के उत्तर दिए । एक ईसाई धर्म अपनाने की कीमत चुकाने के लिए उन्होंने मुझे सचेत किया परन्तु मैं इसके लिए भी तैयार था । अपने भाइयों तथा बहनों में मैं सबसे बड़ा था । अगले कुछ महीनों में मुझे कई पीड़ाओं से गुजरना पड़ा - यहां तक कभी कभी शारीरिक यातनाओं से भी और अन्त में मेरे पिताजी ने मेरा त्याग कर दिया तथा मुझे घर से बाहर कर दिया । यह मेरे जीवन का कठिनतम दौर था । किसी ईसाई ने मुझे आश्रय प्रदान करने का साहस नहीं दिखाया । यहां तक कि चर्च के पादरी द्वारा मुझे अपने गृहनगर में ईसाई बनने के संस्कार प्रदान करने की भी कई बार मनाही की गई क्योंकि उन्हें मेरे पिताजी का भय था जिनका उस -ा□र में □ाफी प्रभाव था ।

अन्त में ईसाई धर्म अपनाने के प्रति आवश्यक संस्कार/नामकरण हेतु मैं योग्य हो गया तथा जीसस के प्रति अपना विश्वास खुलकर व्यक्त किया । लगभग पांच वर्षों तक लगातार मुझे अपने पारिवारिक सदस्यों से सभी प्रकार की धमकियां मिलती रहीं । इन वर्षों में मैं कठिन दौर से गुज़रा जिसका मैं आदी नहीं था । अधिकतर समय मेरा जीवन जोखिम भरा था । परन्तु मेरे मालिक प्रभु जीसस ने हर बार मेरी रक्षा की, मुझे हरे भरे चरागाह में लिटा दिया । अपने जीवन में मुझे उनकी सही बातें सुनने को मिलीं तथा प्रभु की अच्छी बातों को मैं अपने लोगों को सुनाता कि मेरे जीवन में उस प्रभु ने क्या किया है । लगभग

आठ साल के बाद मेरे पिताजी मेरे पास आए तथा विवाद समाप्त हो गया । तबसे मुझे अपने पिताजी के घर अपनी माताजी, भाइयों तथा बहनों को मिलने/देखने जाने की अनुमति मिल गई । परन्तु हर बार मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं हुआ । मेरी माता मुझे गले से न लगा पाती क्योंकि उनके लिए जाति से निष्काषित था । आज के दिन तक मेरा पूरा परिवार अंधकार में है । वे अपनी ओर से अपने मुक्ति दिवस की बिना किसी गांरटी के अच्छे कर्म करने के प्रयास कर रहे हैं ।

अपने अच्छे कर्मों से नहीं, बल्कि जीसस में विश्वास की कृपा ने मेरी रक्षा की । पिछले तीस वर्षों से मैं इस कहानी को अन्य लोगों को सुना रहा हूँ जो प्रभु की कृपा को छोड़कर कुछ नही जानते तथा मैं अपने जीवन के अन्त तक इसे लगातार इस प्रकार सुनाता रहूंगा । उन व्यक्तियों के लिए जो अपने अच्छे कर्मों से मुक्ति पाने के लिए सभी संभव प्रयास कर रहे हैं, प्रभु की कृपा को छोड़कर इसके बारे में भी जान सकेंगे, ऐसी मेरी प्रार्थना है ।

प्रभु करे कि उनके दिलों के द्वार खुल जाएं तथा वे अंधकार से प्रकाश की ओर लौटें ।

बी सी एस